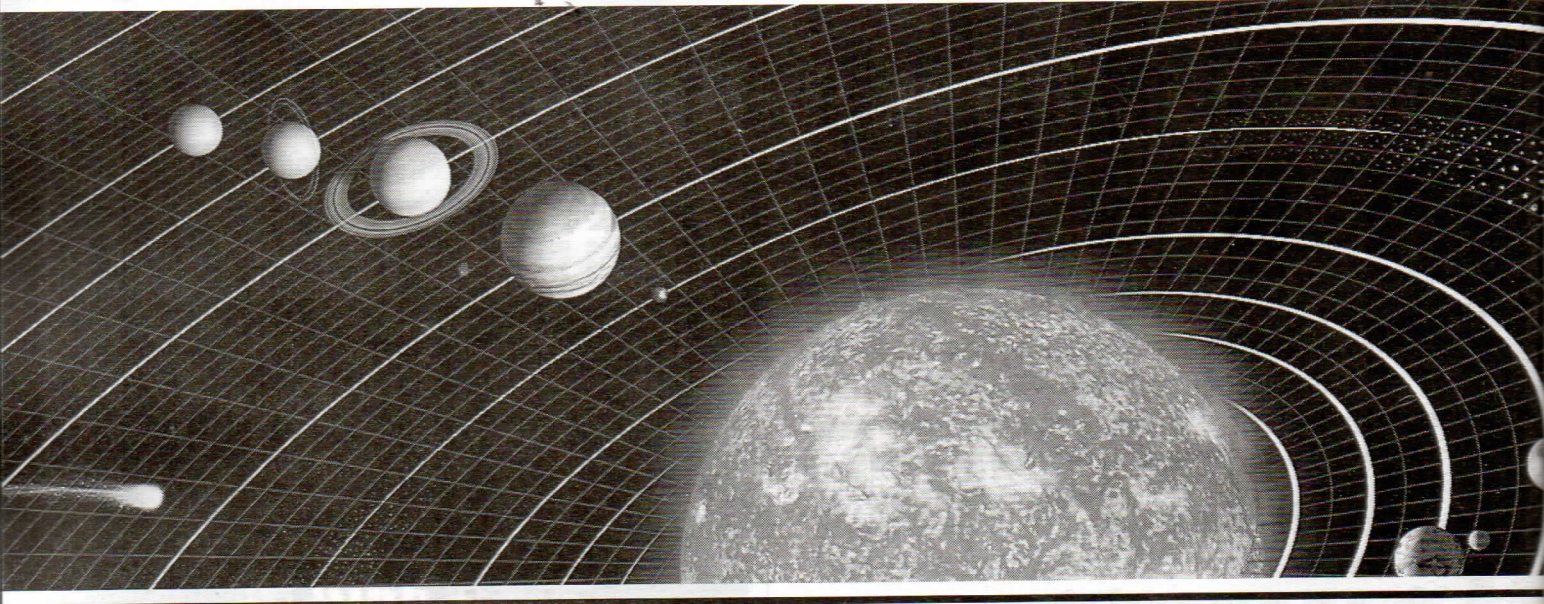

भाव चलित का फलित में महत्त्व

अनेक बार ऐसा देखने में आता है कि कोई ग्रह अपनी स्थिति के अनुसार फल नहीं दे रहा होता है जैसे लग्नेश लग्न में है, तो लगता है कि वह अपनी दशा में स्वास्थ्य संबंधित अनुकूल फल प्रदत्त करेगा परन्तु यदि वह भावचलित में 12वें भाव में है, तो स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां भी उत्पन्न कर सकता है।

सुशील अग्रवाल

प्राचीन समय में भचक्र की कल्पना एक गोल वृत्त के रूप में की गई थी। समय के साथ-साथ निरंतर होते शोधों के आधार पर यह निश्चित हुआ कि भचक्र दीर्घवृत्तीय (अंडाकार) है, जो क्रांतिवृत्त से 8° उत्तर एवं दक्षिण की ओर फैला हुआ है। (मतान्तर से 9° भी माना गया है।) वृत्त की परिधि तो 360° ही होती है, परन्तु दीर्घवृत्तीय आकृति होने और अपनी धुरी पर झुके रहने के कारण कुछ भाव 30° (360°/12) से कम या अधिक हो जाती है। भाव चलित कुंडली के प्रचलन में आने का यही मुख्य कारण है। ज्योतिषीय फलित के दृष्टिकोण से इसका महत्त्व ही इस लेख का विषय है।

पद्धतियां

भावचलित की निम्नलिखित दो पद्धतियां प्रचलित हैं :

सम भाव : इस पद्धति में प्रत्येक भाव 30° का ही माना जाता है, परन्तु उस क्षेत्र मध्य से 15° आगे और 15° पीछे होता है। मान लीजिए कि धनु लग्न में लग्न मध्य $8^{s}03°$ है। सूर्य वृश्चिक राशि में 20° पर स्थित है अर्थात जन्मपत्रिका में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। भावचलित में सूर्य लग्न में होंगे, क्योंकि लग्न का विस्तार क्षेत्र $7^{s}18°$ से $8^{s}18°$ तक है।

इसी प्रकार सभी ग्रहों को समझना चाहिए। इस विधि का लाभ यह है कि बिना कम्प्यूटर आदि की सहायता के भी इसका आकलन आसानी से किया जा सकता है।

असमान भाव : यह विधि अधिक सटीक है। इस विधि के अंतर्गत लग्न मध्य और दशम मध्य के आधार पर सभी भावों के आरंभिक (अग्रिम भाव से संधि) बिन्दु निकाले जाते हैं। लगभग सभी सॉफ्टवेयर आचार्य श्रीपति की गणना विधि का अनुसरण करते हैं। इस पद्धति में भाव का क्षेत्र 30° से अधिक या कम हो सकता है।

भावचलित में फलित

जन्मपत्रिका मुख्य होती है जो ग्रहों और लग्न की राशि की स्थिति का बोध कराती है जबकि भावचलित से भावेशों की स्थिति और उनकी सक्षमता का आकलन करना चाहिए। यहां ग्रहों और भावेशों के अन्तर को समझना आवश्यक है। अर्थात ग्रह की स्थिति जन्मपत्रिका के अनुसार वही रहती है। इसलिए ग्रहों से संबंधित युति, उच्च, नीच, शत्रु, मित्र योग (जैसे गजकेसरी आदि) जन्मपत्रिका से ही निर्मित होंगे। ग्रहों के नैसर्गिक प्रभाव को देखने के लिए दृष्टियां भी जन्मपत्रिका वाली रहेंगी। भावेशों से संबंधित योग (जैसे राजयोग, धनयोग आदि) और फल भावचलित के अनुसार घटित होंगे।

अनेक बार ऐसा देखने में आता है कि कोई ग्रह अपनी स्थिति के अनुसार फल नहीं दे रहा होता है जैसे लग्नेश लग्न में है, तो लगता है कि वह अपनी दशा में स्वास्थ्य संबंधित अनुकूल फल प्रदत्त करेगा परन्तु यदि वह भावचलित में 12वें भाव में है, तो स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां भी उत्पन्न कर सकता है।

फलित में भाव मध्य के महत्त्व को फलदीपिका के अनुसार निम्नलिखित दो श्लोकों से स्पष्ट कर दिया है :

स्वोच्चे सुहृत्क्षेत्रगतो ग्रहेन्द्रः
षड्भर्बलैर्मुख्यबलान्वितोऽपि।
सन्धौ स्थितः सन्नफलप्रदः स्यात् एवं
विचिन्त्यात्र वदेद्विपाके।।

अर्थात् कोई ग्रह चाहे उच्च राशिस्थ, मित्र राशिस्थ या पूर्ण षडबल युक्त हो, परन्तु यदि वह भाव संधि पर है तो वह फल नहीं देता। दशाफल कहते समय इस नियम का विचार करना चाहिए।

भावेषु भावस्फुटतुल्यभागस्तद्भावजं
पूर्णफलं विधत्ते।
सन्धौ फलं नास्ति तदन्तराले
चिन्त्योऽनुपातः खलु खेचराणाम्।।

अर्थात भाव मध्य से जितना दूर होंगे उतने ही अनुपात में कम फल मिलता है। सटीक विचार करने के लिए गणित कर लेना चाहिए।

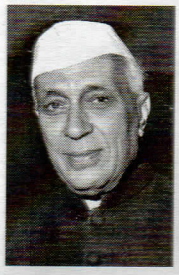

श्लोक में वर्णित इस गणित को समझने के लिए पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की जन्मपत्रिका लेते हैं :

जन्मपत्रिका

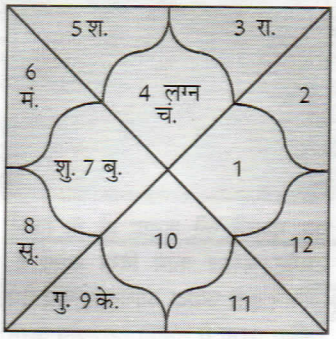

लग्न स्पष्ट 24° है और षष्ठेश गुरु 15° पर स्थित है। सम पद्धति से षष्ठ भाव का क्षेत्र 30° मान लेते हैं। भाव मध्य यदि 24° है, तो गुरु भव आदि (9°) से 6° चल चुके हैं और भाव मध्य 24° (100 प्रतिशत) तक पहुंचने के लिए 9° (15° + 9° = 24°) और चलना शेष है। इसलिए उनकी सक्षमता 40 प्रतिशत (100/15×6) हुई जबकि जन्मपत्रिका में देखने में गुरु स्वराशि होकर बहुत सशक्त लग रहे हैं।

अमिताभ बच्चन
जन्मपत्रिका

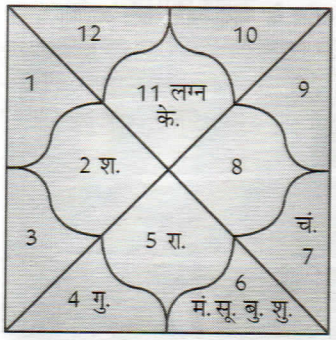

अमिताभ बच्चन की जन्मपत्रिका में चार ग्रह अष्टमस्थ हैं, जो सामान्यतः एक अशुभ जन्मपत्रिका का संकेत है, परन्तु भावचलित कुंडली में अष्टम भाव से तीन ग्रह नवम में चले गए हैं जिससे भाव संबंधित फलों की स्थिति भिन्न हो गई।

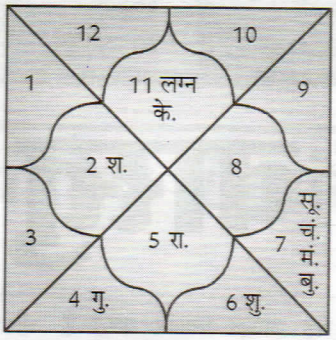

उदाहरण 2

जन्म दिनांक : 24 जून, 1971
जनम समय : 19:15 बजे
जन्म स्थान : नई दिल्ली

जन्मपत्रिका

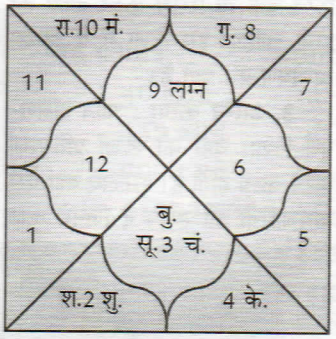

इस कुण्डली में अष्टमस्थ केतु अपनी वर्तमान दशा में कुछ उतार-चढ़ाव के साथ अच्छे परिणाम दे रहे हैं जबकि एक ज्योतिषी ने कुछ समय पूर्व कहा था कि केतु की दशा जातिका के जीवन की सबसे अंधकारमय अवधि रहेगी।

केतु अष्टम भाव में स्थित होकर मंगल और शनि से दृष्ट है जिससे अशुभ परिणाम की घोषणा करना दृष्टि से तर्कसंगत लगता है।

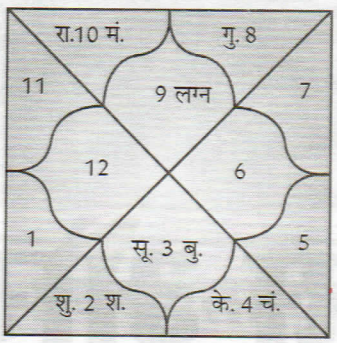

निम्न भावचलित का आकलन करने पर स्थिति भिन्न हो जाती है क्योंकि चन्द्रमा भी अष्टम भाव में आ गए हैं। चन्द्रमा की स्थिति भाव संबंधी शुभ फलों में वृद्धि करेगी क्योंकि चन्द्रमा अष्टमेश हैं। इसके अतिरिक्त केतु 21° के होकर भाव मध्य (श्रीपति) 13° से लगभग 8° दूर होकर 50 प्रतिशत से कम फल देने में ही सक्षम हैं।

केतु-शुक्र में जातिका ने तलाक का केस किया जो कि वह बहुत वर्षों से करना चाहती थी।

तलाक मिला, स्वर्जित घर खरीदा, कार आदि ली और तीनों बेटों के साथ केवल अपने बलबूते पर बहुत खुशी से रह रही है। मानसिक रूप से कई बार कुछ परेशान होती है, परन्तु फिर संभल भी जाती है। जातिका के अनुसार यह उनके जीवन का सबसे अच्छा समय चल रहा है। अष्टमस्थ दशा होने के कारण उतार-चढ़ाव तो बहुत रहे परन्तु चन्द्रमा की भावचलित स्थिति से अशुभ फल न्यून हो गए।

निष्कर्ष रूप में भाव चलित से संबंधित मतान्तर भी हैं, परन्तु अधिक प्रचलित मत और अनुभव से यह कह सकते हैं कि सटीक ज्योतिषीय फलित के लिए भावेश का भाव चलित के अनुसार और ग्रह तथा कारक का ग्रह अवस्था के अनुसार फलित करना चाहिए।

मानसिक रूप से कई बार कुछ परेशान होती है, परन्तु फिर संभल भी जाती है। जातिका के अनुसार यह उनके जीवन का सबसे अच्छा समय चल रहा है। अष्टमस्थ दशा होने के कारण उतार-चढ़ाव तो बहुत रहे परन्तु चन्द्रमा की भावचलित स्थिति से अशुभ फल न्यून हो गए।